रुपये के गिरावट के पीछे के संरचनात्मक कारणों को समझना

भारतीय रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले काफी गिर गया है और इसका एक नया निचला स्तर देखा गया है। यह प्रवृत्ति वैश्विक आर्थिक परिदृश्य और घरेलू कारकों से जुड़ी हुई है। आइए इस गिरावट के पीछे के संरचनात्मक कारणों को गहराई से समझते हैं।

by OJAANK IAS

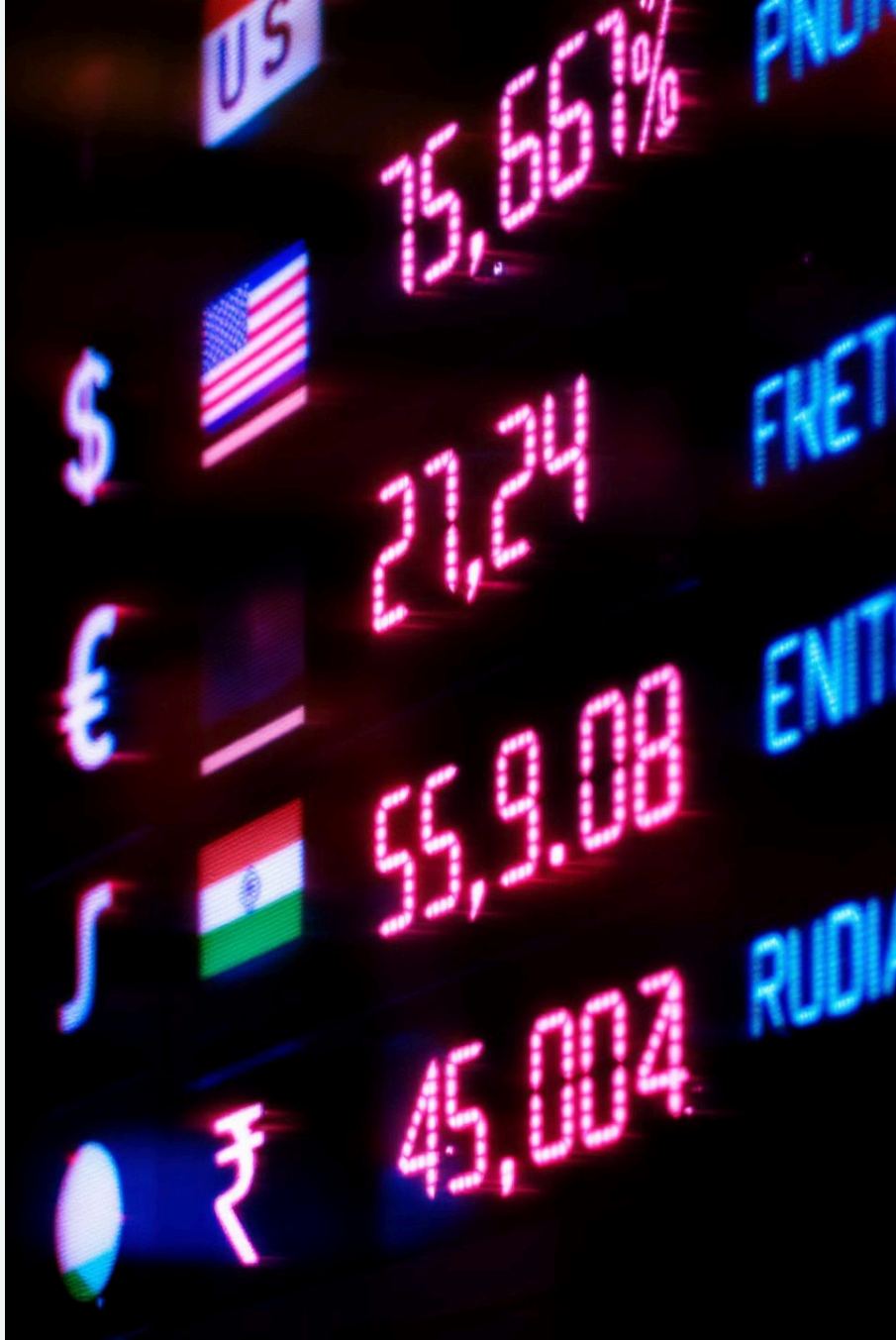

मुद्रा अलचीनता और व्यापारवादी दृष्टिकोण

आरबीआई की हस्तक्षेपकारी नीति

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) रुपये के मूल्य में गिरावट को दबाने के लिए हस्तक्षेप कर रहा है, लेकिन इससे एक कृत्रिम अलचीनता पैदा हो गई है।

व्यापारवादी दृष्टिकोण

आरबीआई की हस्तक्षेपकारी नीति को व्यापारवादी दृष्टिकोण के समान माना जा रहा है, जिसका उद्देश्य आर्थिक लाभों के लिए मुद्रा के मूल्य को प्रबंधित करना है।

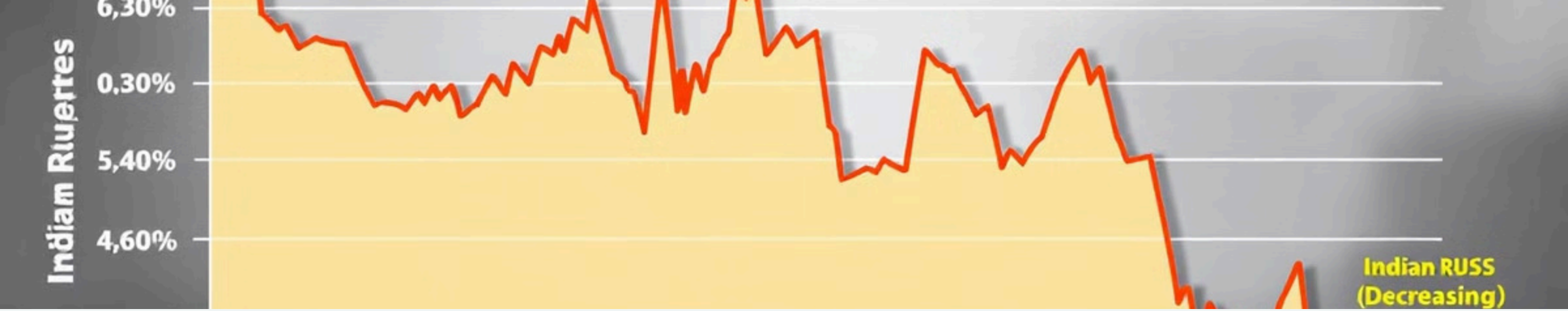

अमेरिकी डॉलर की ताकत

1 **अमेरिकी आर्थिक ताकत**

अमेरिकी अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक मजबूत है, जिससे अमेरिकी फेडरल रिजर्व (फेड) को कठोर रुख अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है।

2 **विस्तृत विकास अंतर**

यूरोजोन के मुकाबले अमेरिकी अर्थव्यवस्था की मजबूती और अधिक प्रकट है।

3 **चीन की मुद्रा लचीलापन**

चीन अपने आर्थिक मंदी का सामना करने के लिए अधिक मुद्रा लचीलापन अपना रहा है, जिससे डॉलर उभरते बाजार (ईएम) सूचकांक पर दबाव पड़ रहा है।

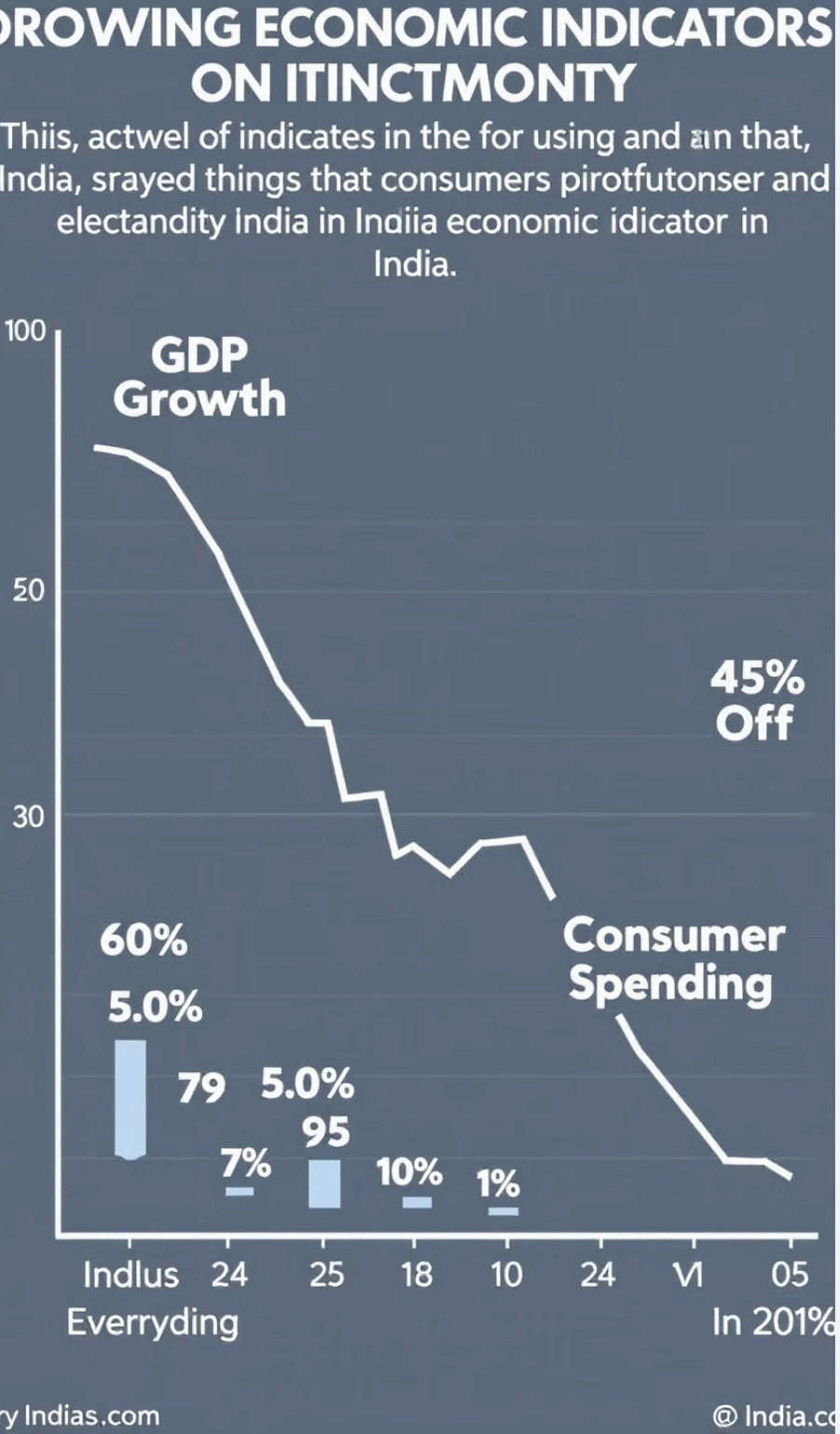

घरेलू कारक: वृद्धि चिंताएं और मांग में ढीलापन

वृद्धि अनुमानों में कमी

भारतीय रिज़र्व बैंक और केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने भारत के सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि अनुमानों को कम कर दिया है, जो वास्तविक वृद्धि के बारे में चिंताओं को दर्शाता है।

ग्रामीण मांग की कमजोरी

ग्रामीण मांग में लंबे समय से चली आ रही कमजोरी एक प्रमुख कारक रही है, साथ ही एक संक्षिप्त शहरी मांग की वापसी और घरेलू कमजोरी।

उत्पादकता में गिरावट

ग्रामीणीकरण में वृद्धि, प्रति कर्मचारी वास्तविक आय में कमी, और घरेलू बचत में कमी उत्पादकता में गिरावट के संकेत हैं।

पूंजी प्रवाह अस्थिरता और निवेश प्रभाव

पूंजी प्रवाह अस्थिरता

भारत में पूंजी प्रवाह अत्यधिक अस्थिर हो रहा है, जो पोर्टफोलियो प्रवाह, एफडीआई और बाह्य वाणिज्यिक उधारियों को प्रभावित कर रहा है।

भारतीय इक्विटी का कमजोर प्रदर्शन

भारतीय इक्विटी सूचकांक अमेरिकी एस एंड पी 500 की तुलना में मामूली रिटर्न दिखा रहे हैं, जिससे विदेशी संस्थागत निवेशक प्रवाह भी प्रभावित हो रहा है।

नीतिगत विकल्प और प्रतिबंध

1

सीमित नीतिगत विकल्प

रिजर्व बैंक और सरकार को रुपये के मूल्य में गिरावट को प्रबंधित करने में कई प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, जिसमें मौद्रिक नीति और राजकोषीय गुंजाइश शामिल हैं।

2

मौद्रिक ढीलापन

अमेरिकी फेडरल रिजर्व के साथ नकारात्मक वास्तविक नीति दर अंतर के कारण, रिजर्व बैंक के नीति दरों में ढील देने का विंडो संकीर्ण है।

3

एनआरआई जमा योजना

रिजर्व बैंक 2013 के टेपर टैंट्रम के दौरान देखे गए तरह, मूल्य में गिरावट के प्रभाव को कम करने के लिए एक एनआरआई जमा योजना का सहारा ले सकता है।

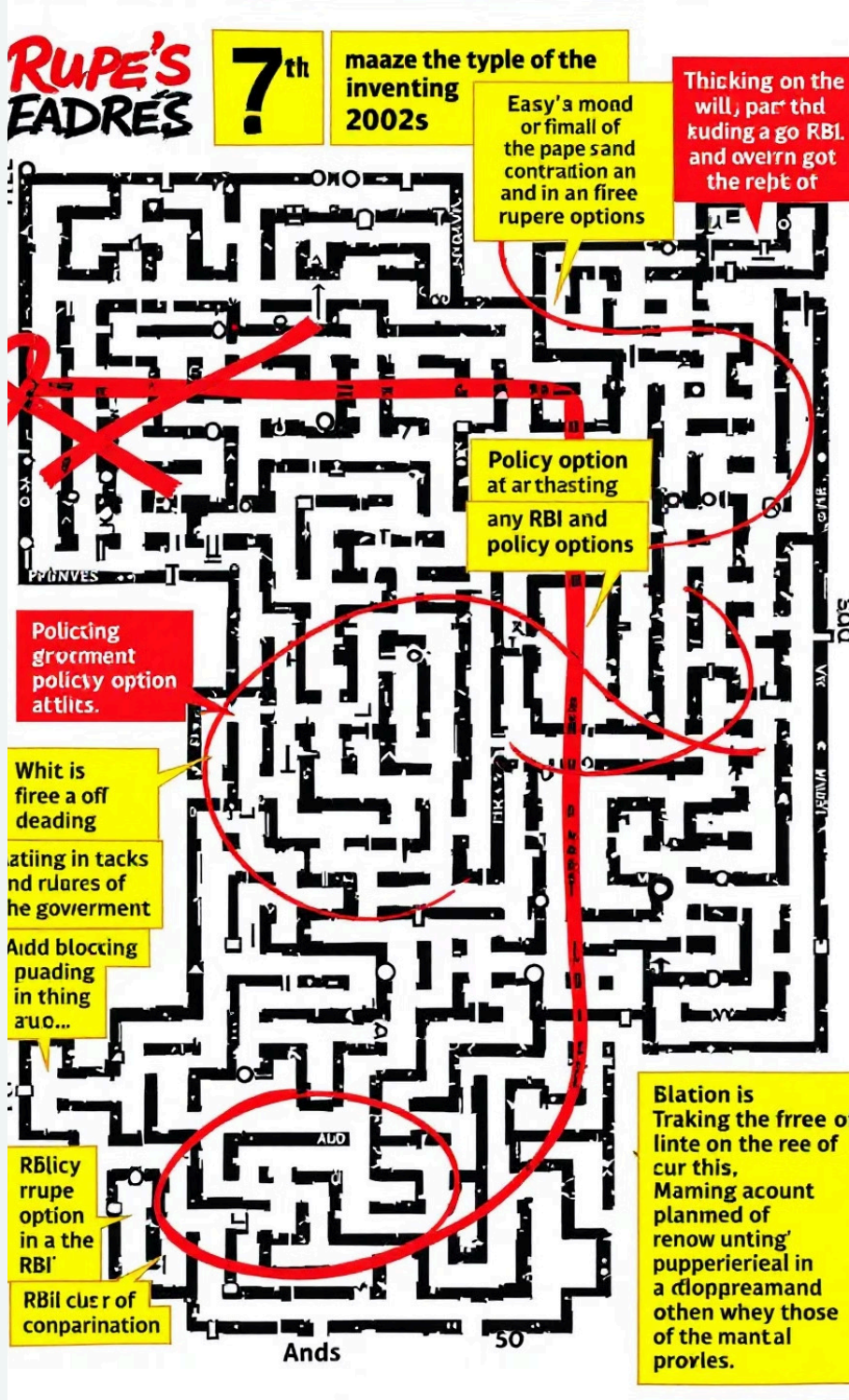

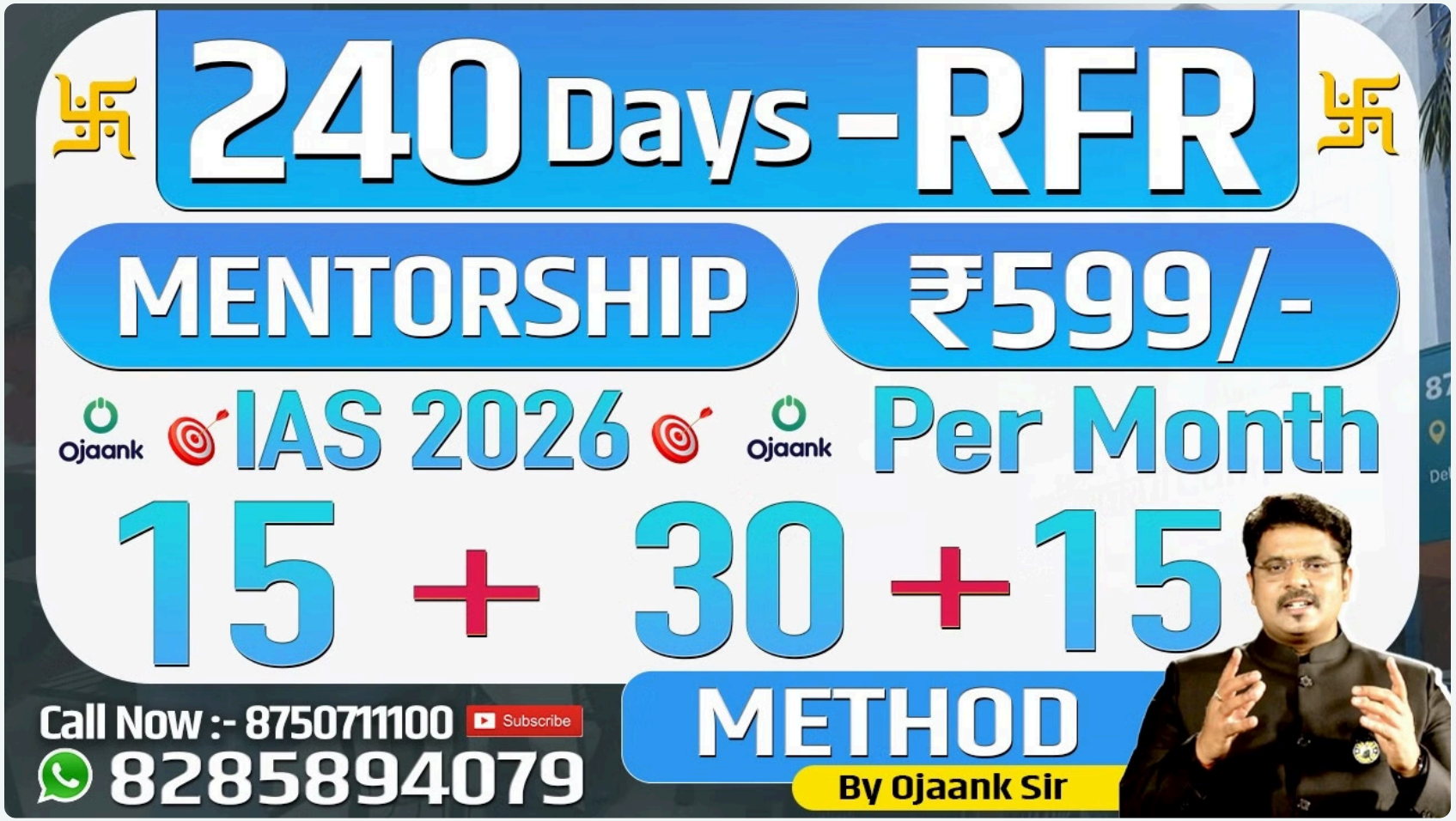

Free Test Link - https://ojaankias.akamai.net.in/new-courses/492

मुद्रा लचीलापन की आवश्यकता

1

मुद्रा अलचीलापन और वृद्धि

आरबीआई की मुद्रा अलचीलापन ने आर्थिक वृद्धि को बाधित किया है और अर्थव्यवस्था पर दबाव डाला है।

2

तरलता तनाव में कमी

अधिक मूल्य-क्षरण की अनुमति देने से तरलता तनाव में कमी आ सकती है और अत्यधिक खुदरा ऋण के बारे में चिंताओं को दूर करने में मदद मिल सकती है।

रुपये पर वैश्विक प्रवृत्तियों का प्रभाव

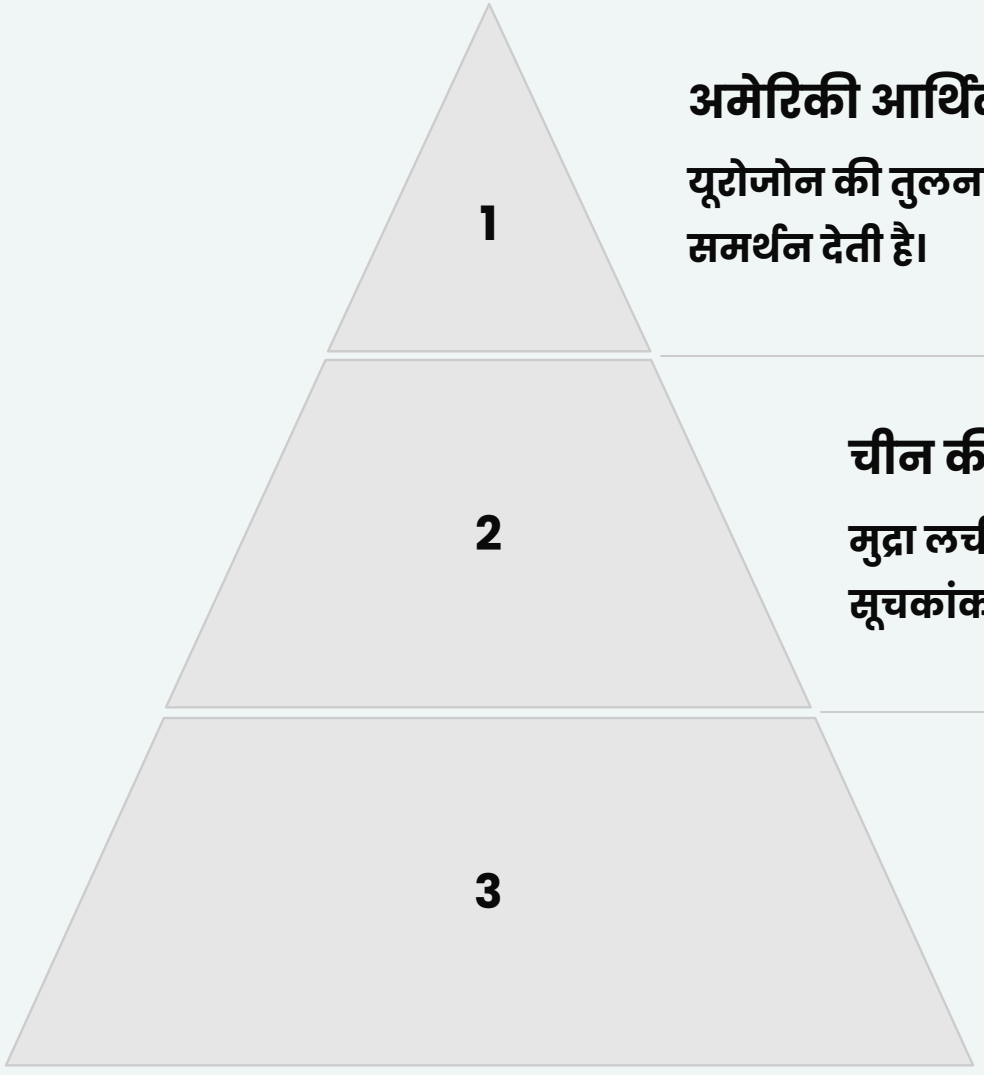

अमेरिकी आर्थिक मजबूती

यूरोजोन की तुलना में अमेरिकी अर्थव्यवस्था की मजबूती डॉलर के मूल्य को समर्थन देती है।

चीन की मुद्रा लचीलापन

मुद्रा लचीलापन की ओर चीन की गति डॉलर उभरते बाजार सूचकांक और भारतीय रुपये को प्रभावित करती है।

भू-राजनीतिक जोखिम

बढ़ते भू-राजनीतिक जोखिम वैश्विक नीतिगत अनिश्चितता में योगदान करते हैं और उभरते बाजारों में पूंजी प्रवाह को प्रभावित करते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था की गतिशीलता को समझना

1

ग्रामीण मांग की कमजोरी

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए ग्रामीण मांग में लगातार कमजोरी एक चुनौती बनी हुई है।

2

घरेलू कमजोरी

महामारी और आर्थिक मंदी के प्रभाव को दर्शाते हुए घरेलू कमजोरी जारी है।

3

उत्पादकता में गिरावट

अनौपचारिक क्षेत्र सहित उत्पादकता में गिरावट एक महत्वपूर्ण चिंता है।

भारत की वृद्धि संभावना और रुपये की गति

1

वृद्धि चिंताएं

भारत के सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि अनुमानों में कमी आना अर्थव्यवस्था की मूलभूत स्वास्थ्य के बारे में चिंताओं को दर्शाता है।

2

डॉलर की ताकत

अमेरिकी डॉलर की ताकत निकट भविष्य में जारी रहने की उम्मीद है, जो रुपये पर दबाव डाल रही है।

3

पूंजी प्रवाह की अस्थिरता

पूंजी प्रवाह में अस्थिरता भारतीय अर्थव्यवस्था और रुपये के मूल्य को लगातार प्रभावित करती रहेगी।

मुद्रा अस्थिरता प्रबंधन में RBI की भूमिका

मुद्रा अस्थिरता प्रबंधन

अमेरिकी डॉलर मजबूत होने और वैश्विक अनिश्चितता बनी रहने के कारण, मुद्रा अस्थिरता प्रबंधन करने की RBI की क्षमता का परीक्षण होगा।

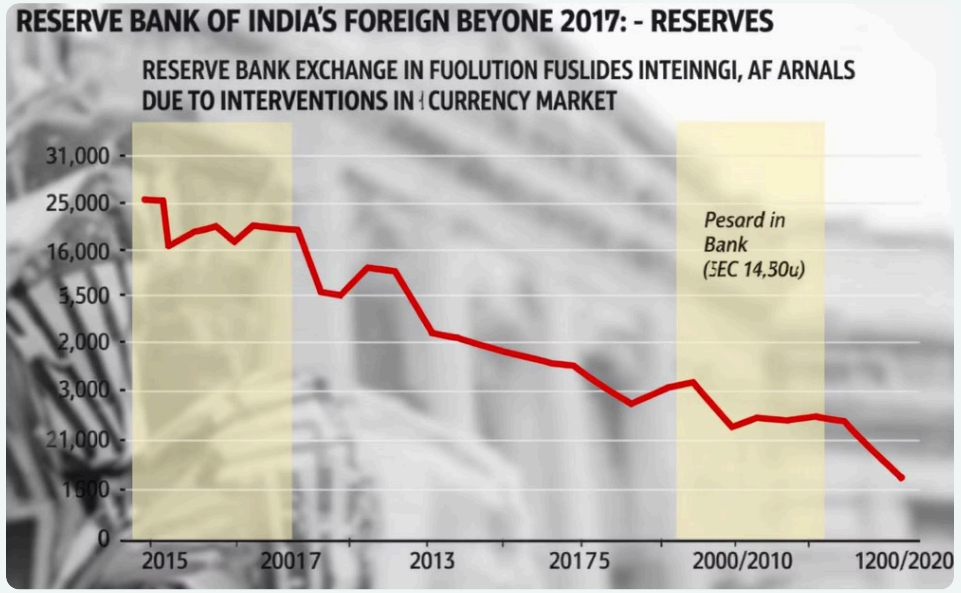

विदेशी मुद्रा भंडार

मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप जारी रखने के कारण, RBI का विदेशी मुद्रा भंडार कम हो सकता है।

आर्थिक चुनौतियों और रुपये की भविष्य की नेविगेशन

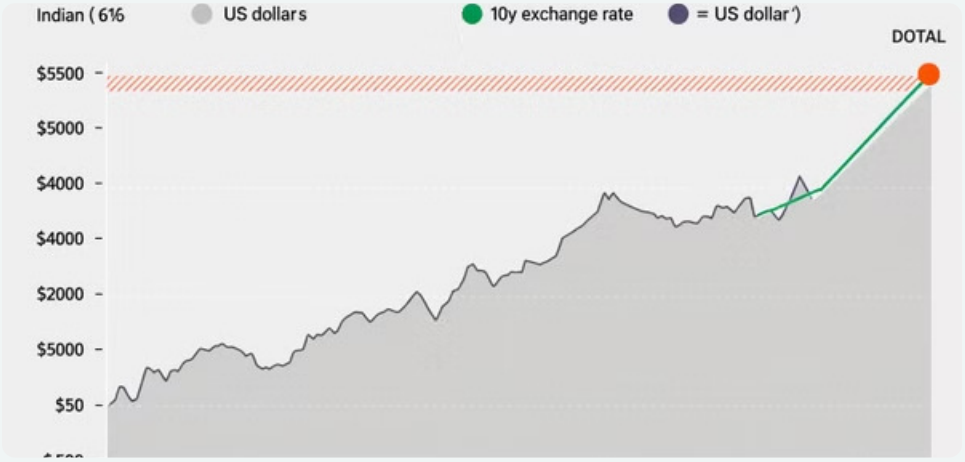

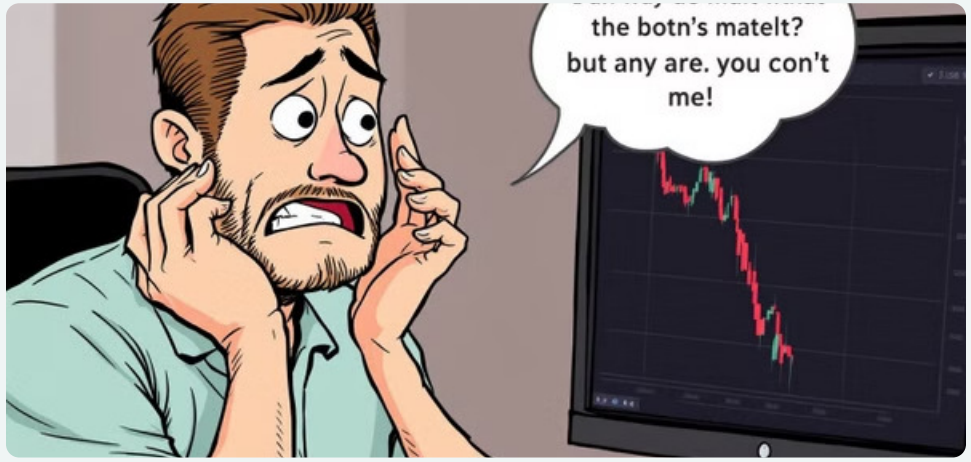

प्रमुख निष्कर्ष और आगे की दिशा

रुपये का मूल्यह्रास वैश्विक और घरेलू कारकों के जटिल परस्पर क्रिया से प्रेरित है। जबकि भारतीय रिज़र्व बैंक मुद्रा की अस्थिरता को प्रबंधित करने में सीमाओं का सामना करता है, घरेलू चुनौतियों को संबोधित करने और अधिक लचीली मुद्रा नीति को अपनाना आर्थिक वृद्धि और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

Follow Ojaank Sir

IAS with Ojaank Sir

Ojaank_Sir

IAS with Ojaank Sir

Free PDF Content

पाने के लिए अभी JOIN करें

8285894079

8285894079